Introduction

प्रस्तावना

प्रतिभा, प्रकृति का वह अनुपम उपहार है, जो व्यक्ति को स्वाभाविक रूप से प्राप्त होती है । अपनी बहुमुखी प्रतिभा के कारण ही मनुष्य अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ और बुद्धिमान माना जाता है किन्तु यह प्रतिभा सभी को समान रूप से प्राप्त नहीं होती है । विश्व के समस्त बाड्.मय मानवीय प्रतिभा के ही परिणाम हैं ।

हिन्दी भाषा को आज राष्ट्र भाषा का गौरव प्राप्त है । हिन्दी भाषा का प्रारम्भिक विकास सातवीं-आठवीं शताब्दी से हुआ, उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हिन्दी खड़ी बोली गद्य का आर्विभाव हुआ । तथा इस भाषा को अनेक कवियों, लेखकों, उपन्यासकारों, नाटककारों तथा साहित्यकारों ने बहुविधि समृद्ध किया है । एक ओर जहां सूरदास, तुलसी, केशव, बिहारी, जयशंकर प्रसाद, मैथलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह 'दिनकर' जैसे महाकवियों ने अपनी अदभुत काव्यकृतियों से अलंकृत किया, वहीं दूसरी ओर उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द, जैनेन्द्र, यशपाल, निबन्धकार रामचन्द्र शुक्ल, डा0 श्याम सुन्दर दास, डा0 हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि ने अपनी साहित्यिक कला से हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि की । आज भी अनेक साहित्यकार हिन्दी साहित्य को सम्पन्न और समृद्ध बनाने में संलग्न है । इसी कड़ी में **एक नाम है श्री गोविन्द मिश्र** ।

हिन्दी साहित्य विषय से स्नातकोत्तर पश्चात, साहित्य रूचि जाग्रत हुयी उसका परिणाम हुआ सेन्ट्रल लायब्रेरी की सदस्यता अनायास गोविन्द मिश्र कृत **'लेखक की जमीन'** हाथ लगी, जिसमें विभिन्न लेखकों द्वारा मिश्र जी के साक्षात्कारों का विस्तृत ब्यौरा है, उसमें मिश्रजी के जन्म, परिवार, रचना,-प्रक्रिया, वर्तमान साहित्यिक परिस्थितियों पर उनके विचार मनभावन थे, और ज्यादा जानने के लिए उपलब्ध हो पाए, दो उपन्यास 'तुम्हारी रोशनी में' और 'धीर समीरे' पढ़ डाले । उपन्यास नारी समस्या एवं विविधता लिये थे । अतः माननीया गुरू डा0 प्रेमलता बाफना से गोविन्द मिश्र के साहित्य विषय पर शोधकार्य करने की इच्छा प्रकट की, एवं डा0 बाफना ने सहर्ष मार्ग दर्शन का आर्शीवाद देकर प्रोत्साहित किया । लेखक के ऊपर इस

विश्वविद्यालय में कोई शोधकार्य न हुआ होना, मार्गदर्शिका द्वारा बताये जाने पर कठिन परिश्रम एवं नयेपन का अहसास मन को और दृढ़ता प्रदान कर गया । शोध प्रबन्ध का शीर्षक बना - **"गोविन्द मिश्र और उनकी साहित्य साधना - 1991 तक ।"**

गोविन्द मिश्र ने आधुनिक हिन्दी साहित्य में अपने अनूठे कार्य से अद्वितीय स्थान प्राप्त किया है । उन्होंने अपने उपन्यास, कहानी, निबन्ध साहित्य के द्वारा जो क्रान्ति और परिवर्तन का विरोध और संघर्ष का स्वर उठाया है, वह वस्तुतः आधुनिक युग के अनुरूप ही है। युगान्तकारी साहित्य सृजन की प्रेरणा से गोविन्द मिश्र ने साहित्य के विविध रूपों को ग्रहण किया है वर्तमान सामाजिक और राजनीतिक प्रभाव को, जो साहित्य को भी प्रभावित कर रहा है, निर्भीक मन से, अपने साहित्य में स्थान दिया है । उनके समग्र साहित्य के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि मिश्र जी समय पारखी हैं तथा साहित्य मर्मज्ञ है, इसीलिए समसामयिक परिस्थितियों, परिवर्तित वातावरण तथा बढ़ती राजनीति का उन्होंने खूब खुलासा किया है । आज भी वे सतत् साहित्य रचना में संलग्न है ।

मिश्र जी समकालीन राजनीतिक - सामाजिक जीवन की विसंगतियों को उनकी तमाम विडम्बनाओं के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं । इस स्तर पर वे बुद्विजीवियों की अवसरवादिता चापलूसीवृति तथा दोगलेपन को चित्रित करते हुए सत्ता काँक्षा की पतनशील तस्वीर को अंकित कर रहे हैं । दूसरी ओर वे राजनीतिक सत्ता गुटों से बिल्कुल अलग एक ऐसी दुनिया को उजागर करने में लगे हैं, जहाँ रिश्तों का बनना बिगड़ना समय के साथ कम परिवेश के साथ अधिक गुँथा हुआ होता है । इस स्तर पर वे बदलती सामाजिक चेतना को माटी की शिनाख्तों के साथ जोड़कर एक नये सृजनशील भारतीय चरित्र को अँकित कर रहे हैं । दोनों जगह केन्द्र व्यक्ति ही हैं ।

अनुशीलन की दृष्टि से मैंने अपने शोध प्रबन्ध को छह अध्यायों में विभक्त किया है ।

प्रथम अध्याय में श्री गोविन्द मिश्र के सम्पूर्ण जीवन वृत, व्यक्तित्व और साहित्य का परिचय प्रस्तुत किया गया है । उत्तर प्रदेश राज्य के बाँदा जनपद के अतर्रा कस्बे में 01 अगस्त, 1939 को जन्मे गोविन्द मिश्र, श्री माधव प्रसाद मिश्र एवं श्रीमती सुमित्रा मिश्रा की पाँच सन्तानों में सबसे बड़े पुत्र हैं । मिश्र जी ने आर्थिक अभावों के रहते हुए 1959 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम0ए0 उत्तीर्ण किया । $19\frac{1}{2}$ वर्ष की अवस्था में मिश्र जी का विवाह श्रीमती शकुन्तला मिश्र से हुआ । मिश्र जी के माता पिता दोनों ही प्राथमिक पाठशाला में अध्यापक थे । 1959-61 तक डिग्री कालेज में अध्यापन किया । 1961 में भारतीय राजस्व सेवा में चयनित होकर आजकल चीफ इन्कम टैक्स कमिश्नर, अहमदाबाद के पद की शोभा बढ़ा रहे हैं । ये एक पुत्र (मनोज) एवं एक पुत्री (मनु) के पिता हैं ।

मिश्र जी ने 14-15 वर्ष की आयु से ही लिखना आरम्भ कर दिया था । व्यक्तित्व के धनी मिश्र जी ने अब तक छह उपन्यास, आठ कहानी संग्रहों, दो निबन्ध संग्रहों और तीन यात्रा वृतान्तों का सृजन किया है । निम्नांकित 1991 तक प्रकाशित रचनाएं हैं -

उपन्यास -

1- वह अपना चेहरा ।	2- उतरती हुयी धूप ।
3- लाल पीली जमीन ।	4- हुजुर दरबार ।
5- तुम्हारी रोशनी में ।	6- धीर - समीरे ।

कहानी संग्रह -

1- रगड़ खाती आत्महत्याएँ ।	2- नये पुराने माँ बाप ।
3- अन्तःपुर ।	4- धाँसू ।
5- खुद के खिलाफ	6- खाक इतिहास ।
7- पगला बाबा ।	8- आसमान कितना नीला ।

अन्य -

1- मेरी प्रिय कहानियाँ	2- अपाहिज (लम्बी कहानियाँ)
3- स्थितियाँ रेखांकित (1960 के बाद की कहानियाँ)	4- गोविन्द मिश्र की प्रतिनिधि कहानियाँ

निबन्ध संग्रह -

।- साहित्य का सन्दर्भ । 2- कथा भूमि ।

यात्रा वृतान्त -

।- धुन्ध भरी सुर्खी । 2- दरख्तों के पार---शाम ।

3- झूलती जड़े ।

सर्वविधा संकलन -

मुझे घर ले चलो ।

द्वितीय अध्याय -

द्वितीय अध्याय में मिश्र जी के उपन्यास साहित्य को लिया गया है । जिसमें उपन्यासों की वस्तु, चरित्र-विश्लेषण, देशकाल तथा समाज चित्रण, भाषा शैली का उल्लेख उदाहरणों एवं प्रमाणों द्वारा पुष्टिगत किया गया है । अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है । मिश्र जी के तीन उपन्यास - 'लाल पीली जमीन', 'हुजूर दरबार', एवं 'धीरे समीरे' पुरुष्कृत हो चुके हैं । 'लाल पीली जमीन' - आर्थस गिल्ड आफ इण्डिया द्वारा सम्मानित । 'हुजुर दरबार' - उ0 प्र0 हिन्दी संस्थान द्वारा प्रेमचन्द्र पुरस्कार । 'धीर समीरे' - भारतीय भाषा परिषद, कलकत्ता द्वारा पुरुष्कृत ।

मिश्र जी की औपन्यासिक यात्रा को चार पड़ावों में विभक्त किया जा सकता है । प्रथम पड़ाव के उपन्यास 'वह/अपना चेहरा' व 'उतरती हुयी धूप' में बुद्वजीवियों की अवसरवादिता' चापलूसीवृति तथा दोगलेपन को चित्रित करते हुये सत्ताकाँक्षा की पतनशील तस्वीर को अँकित करते हैं । भाषा में गजब का व्यंग एवं चित्रात्मकता और संवेदनाओं की डूब है, कथा में रवानी है । दोनों ही जगह व्यक्ति ही केन्द्र में है । 'वह/अपना चेहरा' की बाबूओं की दुनियाँ लेखक को इसलिए पीड़ा देती है कि वहाँ आदमी रैकों की संज्ञाओं से नियंत्रित है ।

वह इन ऊपरी शिनाख्तों को तोड़कर मानवीय धरातल तक पहुँच क्यों नहीं पाता, इसका दुःख लेखक को है । सूक्ष्म स्थितियों और बारीकियत का उपन्यास है । नायक की मनोदशा और उसके विचारक्रमों का उलझाव का चित्रण ही इस उपन्यास का मुख्य उद्धेश्य प्रतीत होता है । 'शुक्ला' के व्यक्तित्व के अन्तर्विरोध की, उससे उत्पन्न छटपटाहट, खीझ और नपुंसक आक्रोश की कहानी है 'वह/अपना चेहरा' । 'उतरती हुयी धूप' की भावुक वैयक्तिकता भी अपनी व्यंजना में कस्बई चेतना, प्रेम एवं सौन्दर्य जैसे वैश्विक मूल्यों का व्यावसायिकता के दबाब कुंजों से निकलकर - छनकर उपस्थित हुआ है । कथाभाव में मात्र तृष्णा है, जो प्रथमतया प्रेम के उफान में अपने सम्पूर्ण अर्थ नहीं खोल पाती है और बाद में एकाँगी हो उठती है । उपन्यास स्वपनभंग का यथार्थ चित्रण है । मूलतः उपन्यास दो भागों में विभक्त है, पहला भाग नायक-नायिका के प्रेम प्रसंगों से भरा है, और दूसरे में नायक की नायिका से दस वर्ष बाद, जबकि वह एक बच्चे की माँ और किसी अन्य की पत्नी है से, भेंट होती है। अनेक पड़ाव पार कर जैसे ही वह यह सोचता है कि वह उसे अब भी उपलब्ध है, वैसे ही पटाक्षेप होता है और नायक का स्वपन भंग हो जाता है । 'लाल पीली जमीन' में एक खास अँचल के तौर तरीकों, रिच्युअलों, त्यौहारों में व्यक्त साँस्कृतिक, विरासतों तथा सामाजिक बर्तावों को चित्रित किया गया है । इनके अन्तर्विरोधों के मध्य एक संगति को तलाशा गया है । उपन्यास की महत्वाकाँक्षाएं यहाँ व्यापक स्तर पर परहित चिन्ता से उस अर्थ में सम्बन्ध रखती है, जहाँ असुरक्षा का विषैला वातावरण चारों ओर विषम घटनाओं से भरकर पूरा पटा पड़ा है । मनुष्य की मूल प्रवृतियों के सभ्यतर होते विकास पैटर्न को देखा गया है और देखा गया है कि भारतीय आदमी इतरों से कहाँ विशिष्ट है । उपन्यास की कथा युवा वर्ग में व्याप्त हिंसा और कामकुंठा के गहरे कारणों की पड़ताल करता है । लेखक ने बड़ी सफाई से उन ताकतों की पहचान करायी है, जो युवा वर्ग में हिंसा के कारण हैं , ये शक्तियाँ हैं जातिवाद पर आधारित सामँतवादी प्रवृतियाँ, जो राजनेता अपनी राजनैतिक दुकान चलाने के लिए लगन से पालते - पोसते हैं । उपन्यास की भाषा आंचलिकता से भरपूर है ।

'हुजूर दरबार' सँक्रान्ति के मोड़ पर व्यवस्था और व्यक्ति के द्वन्द्व की बहुआयामी कथा को उद्घाटित करते हुये सामंती ऐयाशी के मंच पर शोषण और विकृति की साझेदारी कैसे नियति और रूपतुष्टि के मायाजाल खड़े कर शोषित प्रजाजनों की जागरूकता को समाप्त कर देती है । सरकारी सुरक्षा की छाँह में पनपता भ्रष्टाचार, प्रमाद, लापरवाही, उत्तरदायित्वहीनता का बेआवाज दमनचक्र अपनी धार से घायल भी करता है परन्तु लहुलुहान कर देने का प्रमाण भी उपस्थित नहीं करने देता । इस सर्वग्रासी हताशा में से परिणाम जरूर निकलता है कि व्यवस्था का रंगरूप यदि हर जगह एक सा और ऐसी ही सड़ाँध पैदा करने वाला है, तो बचाव की आशा व्यक्ति के अपने चारित्रिक विकास में ही जुझने की क्षमता बटोर सकने की है, और उसे कोई सहायता उपलब्ध नहीं है । किस्सेपन में एक परिपक्वता और आस्था 'हुजूर दरबार' की आत्मा को वशीभूत करके रख देती है । संतुलन की दृष्टि से उपन्यास रहस्यमयता लिए है । भाषा सरल, व्यंगात्मक, वर्णनात्मक, विवेचनात्मक, आलंकारिक है । उपन्यास लेखक के दूसरे पड़ाव का स्तम्भ है जहाँ राजसी, जनतांत्रिक राजनीतिकता मुख्य विषय है ।

तीसरे पड़ाव में लेखनी नयी दिशा पर चली और मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास 'तुम्हारी रोशनी में' का सृजन हुआ । आधुनिक नारी 'सुवर्णा की सम्पूर्ण अस्मिता के दर्शन कराता है उपन्यास । जहाँ शहर और कस्बे के साँस्कृतिक टकराव की कथा, मध्यवर्गीय चेतना और नारी की चेतन, अवचेतन भावनाओं की खुली किताब, परन्तु अन्त में द्वन्द्वात्मक स्थिति में पाठक को छोड़ दिया है । उपन्यास आधुनिकता के प्रगतिशील पहलू को तो रेखांकित करता है, भारतीय समाज में नारी स्वातंत्र्य के प्रश्न को भी पर्याप्त गम्भीरता और विश्वसनीयता के साथ उठाया गया है । कथा के स्तर पर बहुत-बहुत परिचित लगने के बावजूद भी यह कहानी व्याख्यान और संवेदन के स्तर पर सार्थक रूप से अविष्कृत सी लगती है । 'सुवर्णा', 'रमेश' और 'अनन्त' जैसे पात्रों के मनोविश्लेषण द्वारा वस्तुवादी सभ्यता के इस दौर के खोखलेपन को तार्किक स्तर पर स्पष्ट करने की कोशिश है । स्त्री-अस्मिता और उसके अस्तित्व की रक्षा उसे दूसरे दर्जे की नागरिकता से मुक्त करने की कोशिश हमारे आधुनिकता बोध का अहं मसला है । आधुनिकता की दौड़ में सम्मिलित होते हुये भी परम्पराओं से मुक्त न हो पाना भारतीय नारी की ऐसी मजबूरी

है, जो व्यक्तित्व को निरन्तर विभाजित करती रहती है और वह अपने ढंग से अपनी शर्तों पर जीने की लालसा रखते हुये संकल्प करते हुये भी, अपनी सामाजिक और पारिवारिक परिस्थितियों की अनिवार्य परिणति को स्वीकार कर लेती है । भाषा मिश्रित, भावपूर्ण, सरल एवं मनोहारी है । शैली पूर्णता को छूने वाली है । उपन्यास का गुजराती में श्रीमती सुनीता चौधरी द्वारा अनुवाद प्रकाशित हुआ है ।

अन्तिम पड़ाव में लेखक आध्यात्म की ओर अग्रसर हुये हैं और परिणाम 'धीर-समीर' का सृजन । उपन्यास की भावभूमि विभिन्नताओं से परे हैं, इसमें समस्त सरोकारों की चर्चा है, जो आज के पदार्थिक संसार की सीमितता के मध्य हाशिए की वस्तु मान लिए गए हैं । उपन्यास हमारे भीतर परम्परा की निरन्तरता के कारण जागे प्रश्नों का बाहर लाने का प्रयत्न करता है पर उन्हें बाहर ले आना अपने आधुनिक कहलाने की इच्छा के विरूद्ध जाना है। उपन्यास के प्रारम्भिक परिवेश में कथा वचन, ब्रजरज, युगलमूर्ति, रास, कीर्तन और चलना --- रूकना, फिर चलना । ऐसा लगता है कि उपन्यास पहले से भीतर एक सकारात्मक स्थापना या तैयारी माँगता है या भारतीय अस्मिता की भक्ति बहुल मन सत्ता को मानकर चलता है । इस कृति का मुख्य परिवेश है - एक यात्रा, जिसे जीवन यात्रा से जोड़ने का प्रयास किया गया है । जहाँ भौगोलिक, ऐतिहासिक, स्थानिक सत्ता में प्रमाणिक तस्वीर है इसमें मध्य वर्ग की बदलती तस्वीर विविध आयामों में तथा धर्म, दर्शन, अर्थ और व्यवहार के आपसी सम्बन्धों की उलझन को चित्रित किया गया है । कथा की चलायमानता ही यही यात्रा है । भाषा आंचलिकता से भरपूर है, शैली कथा के अनुरूप चलायमान, गतिशील एवं व्यासविधि लिए है । इस उपन्यास का गुजराती भाषा में अनुवाद श्रीमती सुनीता चौधरी ने किया है ।

लेखक की औपन्यासिक यात्रा अपनी स्मृतियों, बचपने और अनुभवों की नींव पर आधारित है, जहाँ विघटन और युगबोध पर उनकी कथा पीढ़ी अवस्थित है ।

<u>तृतीय अध्याय -</u>

तृतीय अध्याय में लेखक के 'कहानी साहित्य' को प्रस्तुत किया गया है ।

कहानियों का अध्ययन निम्न शीर्षकों में विभक्त किया गया है । वस्तु, चरित्र विश्लेषण, समस्या विश्लेषण, देशकाल और समाज का चित्रण, भाषा शैली, उद्देश्य तथा निष्कर्ष ।

लेखक के अब तक आठ कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं । इनकी कई कहानियों का मराठी, अंग्रेजी, तेलगू, मलयालम भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित हो चुका है । लेखक ने अपनी कहानियों में जन्म भूमि बाँदा से माँडो, इलाहाबाद, अन्डमान, बम्बई, दिल्ली सभी खण्डों के जीवन चरित्र को उभारा है । वे मनुष्य की उस संवेदना को पकड़ते हैं और उसे पन्नों पर उतारते हैं जो प्रकृति ने मनुष्य को दी थी, पर जिसे आज के आदमी ने धुँधला डाला है । मिश्राजी की अधिकाँश कहानियाँ किसी सैद्धान्तिक विचार की अपेक्षा अनुभव और संवेदना की धुरी पर टिकी हुयी है । कहानियों का कथानक आधुनिक समाज की समकालीन परिस्थितियों, राजनीतिक प्रेरणाओं, मानवीय सवेदना और कुंठाओं, आर्थिक विपन्नता एवं त्रासदी से ग्रस्त मनुष्य के नैतिक पतन पर आधारित है, तथापि कुछ चरित्र अच्छे भी बन पड़े हैं । चारित्रिक दृष्टि से उत्तम, मध्यम एवं अधम चरित्रों की श्रेणी में विवेचना की गयी है । अधिकाँश कहानियाँ समस्या मूलक हैं, जिनमें मानव जीवन की विभिन्न वेदनाओं को उभारा गया है । जीवन जीने की दूरंत समस्या आज समाज में घर बनाये हुये है, क्योंकि समाज में सर्वत्र स्वार्थपरता, छलकपट, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, चारित्रिक गिरावट, राजनैतिक स्वार्थन्धता की कालिख है, परन्तु वहीं 'मायकल लोबो', 'फाँस', 'पगला बाबा', 'जनतन्त्र', इतनी रोशनी में', सुनन्दो की खोली' आदि के पात्र संतुलन कायम करके जीवनचक्र सुचारू करते हैं । 'आल्हखण्ड', अर्थओझल', 'वरणाजलि' आदि कहानियां मन पर अमिट छाप छोड़ती है ।

भाषा शैली की दृष्टि से लेखक ने सरल, सुबोध, मिश्रित आंचलिक, मुहावरेदार भाषा का भावात्मक, वर्णनात्मक सूक्ति परक शैली में समयानुसार सुन्दर उपयोग किया है ।

उद्देश्य की दृष्टि से लेखक का लक्ष्य मनुष्य की उस संवेदना को पकड़ना और रेखांकित करना है, जो प्रकृति ने मनुष्य को दी थी परन्तु जिसे आज के आदमी ने धुँधला दिया है । मिश्र जी की कहानियाँ भारतीय मानस की बुनावट के उत्स पर पुनर्विचार के लिए प्रेरित करती है ।

प्रथम कहानी सँग्रह 'रगड़ खाती आत्महत्याएँ' में कुल 18 {अठारह} कहानियाँ हैं, अधिकाँश कहानियों में व्यथा, वेदना, पीड़ा, कराह, निराशा, अपेक्षा और पतन की भरमार है । मनुष्य उपेक्षा और नशे का शिकार होकर 'मजबूरियों' में 'कुत्ता' तक बन जाता है और 'खंडहरों में प्यासा' रहकर 'कटी-छटी अंगड़ाइयाँ' ले-लेकर 'रगड़ खाता आत्महत्या' तक कर लेता है । द्वितीय कहानी संग्रह - {18 कहानियाँ} 'नये पुराने माँ बाप की अधिकाँश कहानियों में आज के संसार - समाज और मनुष्य को यथार्थ से परिचित कराने का प्रयास है, साथ ही वह उस सौन्दर्य को भी नहीं खोना चाहता, जो जीवन में है । 'दोस्त' एक रूप है, 'बदरँग' और अव्यवस्थित दूसरा रूप है । तृतीय कहानी सँग्रह 'अन्त:पुर' की दस में से अधिकाँश कहानियों की मानसिकता युग से जुड़ी मन:स्थिति का सफल चित्रण करती है । फिर भी शुद्व और सार्थकता की दृष्टि से 'अपरिचय', 'पड़ाव', 'खण्डित' और 'झपटटा' विशेष उल्लेखनीय है । 'कँचकौंध', 'अपाहिज' और 'अन्त:पुर' कहानियाँ क्रमशः ग्रामीण, सामाजिक और राजनीतिक वस्तुस्थिति को उजागर करती है । 'गलत नंबर' अपने ढंग की अनूठी, हल्की फुल्की मनोरंजक कहानी है ।

'धाँसू' कहानी सँग्रह की नौ में से अधिकाँश कहानियाँ नये दौर की द्योतक हैं, इनमें मानवीय सम्बन्धों से अधिक व्यक्ति और स्थितियों के सम्बन्ध उभरकर आये हैं । जो विशेषतया बेईमानी, भ्रष्टाचार, दुराचार और इनसे त्रस्त आदमी की व्यवस्था उभारते हैं । कहानियाँ राजनैतिक चेतना के अन्तर्गत लिखी गयी हैं और महसूस कराती है कि राजनीति दूसरी चीजों को रौंदती हुयी चढ़ बैठती है । 'जनतंत्र', 'गोबर गनेस' एक कोण, 'धाँसू', 'प्रत्यवरोध', 'झूला' दूसरा व अन्य कहानियाँ त्रिभुज के तीन कोण हैं ।

'खुद के खिलाफ' कहानी संग्रह में 11 कहानियाँ हैं । जो जीवन मूल्यों के टूटने के दर्द से सराबोर हैं कहानियों में धृष्टता या कुंठा को विद्यात्मक स्थिति प्राप्त नहीं है यहाँ इनका प्रतिरोध है, प्रतिकार है । वर्तमान में अतीत के, आधुनिक जीवन में फैशन और कृत्रिम आधुनिकता के हस्तक्षेप, पति पत्नी के परस्पर शोषण और कहीं-कहीं व्यक्ति के रागात्मक अस्वीकारों की कहानियाँ हैं । कथ्य और शिल्प दोनों स्तरों पर 'प्रभामंडल' 'कहानी नहीं',

'जंग' प्रभावित करती है वहीं 'खुद के खिलाफ' 'गिद्ध' 'शापग्रस्त', 'ज्वालामुखी' नारी विषयक कहानियाँ गिरावट की सीमा निर्धारित करती है ।

'खाक इतिहास' संग्रह में दस कहानियों की एक अन्तधारा है; महानगरीय जीवन से ऊबा व्यक्ति और खाक बनते इतिहास का ममत्व बोध स्पष्ट करती है । सँग्रह की अधिकाँश कहानियों में बीसवीं सदी की मनुष्यता के साथ जो खतरे और खतरों से जुड़े ज्यादा से ज्यादा प्रश्नों को पाठक के समक्ष उपस्थित कर देने में अपने पूर्वाग्रहों को बाधा न बनने देने की दुलभ तटस्थता दिखायी पड़ती है । 'सान्ध्यनाद' में बूढ़े पति की पत्नी से अपेक्षाएँ, 'आल्हखण्ड' के 'मुसईसिंह', 'मुझे घर ले चलो' का गनेसी 'आने वाली सुबह' में मजहबी भावनाएँ, 'सड़ाँध' का ईमानदार पति 'फाँस' की निश्छल नारी का मानवीय रिश्तों में विश्वास, 'उल्कापात' में नारी के स्वमान संघर्ष से होती कथा यात्रा 'वरणांजलि' में मनुष्य संवेदनाव्रत का दायरा, बुलंदी को छूने का प्रयास, 'खाक इतिहास' की मारिया के अटूट पति प्रेम और लुडविख के देश प्रेम पर प्राण न्योंछावर कर देने से होती हैं ।

'पगला बाबा' संग्रह की दस कहानियों में से प्रत्येक में वस्तुगत यथार्थ का एक ऐसा अन्त:विषयी बिम्ब है, जो रचना की बुनावट से धीरे-धीरे उभार लेता हुआ भावना संसार में सजीव हो उठता है । पात्र, घटना, परिवेश को पीछे छोड़कर नायक नायिका की संवेदना मात्र हाथ आती है । 'एक बूँद उलझी' में अर्थ ही जीवन, 'पगला बाबा' लोक सेवा ही मानव सेवा, 'प्रतिमोह' बम्बई की झोपड़ पट्टी में अपरिचित को स्थान, 'मायाकल लोबो' से क्या अपना दुख ही सबसे बड़ा होता है ? फिर 'सुनन्दो की खोली' में बम्बई की स्वप्निल दुनियाँ के सपने, 'आदेश' में मानवीय मजबूरी, 'गुरू जी' में ईश्वरीय आस्था और 'सिर्फ इतनी रोशनी' में स्नेहाकुल पितृ हृदय, 'अर्थओझल' के ध्येय से विचलित न होकर प्राण त्यागने वाले गुरू की कथायें लेखक की रचना प्रक्रिया की प्रौढ़ता का दर्शन कराती है ।

अन्मि सँग्रह 'आसमान कितना नीला' की ग्यारह कहानियाँ सामाजिक परिवेश में गहराई तक करूणा, संवेदना की सघनता और व्यापक मानवीय सोच की अन्तर्दृष्टि लक्षित करती है । इन कहानियों द्वारा अनेक उलझन भरे प्रश्नों को सकारात्मक दिशा देने का प्रयास किया

गया है । विविध विषयों जैसे 'आक्रामाला' में गँवई दम्पति की त्रासदी, 'छवि' में दंशपूर्ण कटाक्ष, 'यों ही खत्म' 'रूढ़िग्रस्त' समाज के असहाय अतिचारों का ब्यौरा का प्रस्तुतीकरण है 'कालखण्ड' और अवरूद्ध स्वतंत्रता सँग्राम की दुखपूर्ण परिणति एवं 'राम सजीवन की माँ' कस्बाई जिन्दगी एवं निष्कासित' ईमानदार उच्चाधिकारी द्वारा भ्रष्ट अधीनस्थ के प्रति कठोर फैसलों का आत्मालोचन प्रस्तुत करती है ।

चतुर्थ अध्याय -

इस अध्याय में निबन्ध-साहित्य का अध्ययन निम्न शीर्षकों में प्रस्तुत किया गया है- निबन्ध के प्रकार, उनकी वस्तु, निबन्धों की विशेषता तथा भाषा शैली का विवेचन किया है ।

लेखक के दो निबन्ध संग्रहों - 'साहित्य का सन्दर्भ' तथा 'कथाभूमि' को निम्न शीर्षकों में विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है । निबन्धों के प्रकार उनकी वस्तु, निबन्धों की विशेषता, तथा भाषा शैली ।

'साहित्य का संदर्भ' में लेखक ने मुख्यतः आधुनिक साहित्य, एवं साहित्यकारों की रचनाओं पर अपनी समीक्षात्मक एवं आलोचनात्मक लेखनी चलायी है ।

'कथाभूमि' संकलन में परिचय शीर्षक अपना, पृष्ठभूमि, रचना प्रक्रिया पात्रों एवं सपनों की समीक्षा, दृष्टिकोण शीर्षक आलोचना कथा प्रतियोगिता प्रसंगों एवं अन्य रचनाकारों पर विचार प्रस्तुत किए हैं । प्रतिक्रिया शीर्षक विदेशों में भारतीय जीवन एवं लेखक मन को छूते विषयों पर टिप्पणियाँ स्मरण शीर्षक में अमिट छाप छोड़ने वाले व्यक्तित्व एवं घटनाओं जैसे प्रोफेसर देव, होली, आदि पर लिखा है । अंत में; ईश्वर से प्रार्थना, उसमें अपनी आस्था लेखक की जीवन संग्राम में प्रौढ़ता की ओर अग्रसर होना प्रदर्शित करती है ।

प्रतिक्रियायें अवचेतन से प्रसूत छोटे-2 संस्मरण और नितांत अकेले डायरीनुमा लेखा जोखा, साहित्य के रूप में प्रस्तुत है । भाषा मिश्रित, वर्णनात्मक एवं व्यंगों को उजागर करने में सक्षम है । क्योंकि लेखक राजनीति, विश्व समस्याओं, भोपाल गैस कांड, नारी, युवा कथाकार, होली मनाते हुये ईश्वर की महिमा का गुणगान करते हुये वृत पूर्ण होता है ।

पंचम अध्याय -

इस अध्याय में यात्रा साहित्य का प्रस्तुतीकरण है, वस्तु, उपलब्धियाँ, शिल्प तथा निष्कर्ष शीर्षकों के अन्तर्गत । लेखक की घुमक्कड़ प्रवृति, उपलब्ध हुये अवसरों ने सम्पूर्ण भारत एवं विश्व के लगभग सभी महत्वपूर्ण स्थलों के दर्शन करने में सहायक हुये । देश में अंडमान निकोबार, बस्तर, काश्मीर, उत्तर पूर्व की आदि जातीय जीवन की जिस बारीकी से समीक्षा की वह भाषा, शैली एवं कथ्य की दृष्टि से बहुत सुन्दर है । इंग्लैण्ड, जापान, जर्मनी, चेकोस्लोवाकिया आदि देशों में भारतीयों द्वारा जिया जा रहा जीवन, उन देशों की सामाजिक, आर्थिक, साँस्कृतिक, राजनैतिक जीवन का गहरा विश्लेषण एवं उनका भारतीय सन्दर्भ में विवेचन साहित्यिक कृति के स्तर पर उच्च कोटि के दस्तावेज हैं । वर्णन में लयता भाषा में सरलता एवं शैली रोचकता से पूर्ण है ।

अन्तिम अध्याय -

अन्तिम अध्याय उपसंहार, तथा निष्कर्ष के रूप में प्रस्तुत किया गया है । अतः गोविन्द मिश्र के समस्त साहित्य का आधुनिक साहित्य में स्थान निर्धारित करने में सहायक सिद्ध होता है । मिश्र जी के समस्त साहित्य का स्पष्ट उद्देश्य प्रतीत होता है कि वे वर्तमान समाज और राजनीति के बदलते समीकरणों से क्षुब्ध हैं बदलते और संकुचित होते मानवीय विचार, पनपती दूषित पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव उनके मन को झकझोर रहा है । यह निश्चित झलकता है कि आज परिवर्तनशील परिवेश में मिश्र जी के साहित्य का अध्ययन परमोपयोगी, उपादेय और महत्वपूर्ण है । मिश्र जी के साहित्य को समीक्षकों ने जैनेन्द्र तथा भाषा - शैली के लिए प्रेमचन्द्र तथा रेणु के समकक्ष रखा है । गोविन्द मिश्र निश्चित रूप से आधुनिक संदर्भ में पठनीय और माननीय हैं ।